International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 30-10-2021, Accepted: 16-11-2021, Published: 01-12-2021
Volume 7; Issue 6; 2021; Page No. 44-46

पोस्ट बॉक्स नं० 203 नाला सोपारा' का शिल्पगत अध्ययन

डॉ. सविता शर्मा
जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

सारांश

पोस्ट बॉक्स नं० 203 नाला सोपारा' का शिल्प अपने विषय के अनुरूप ही सजग और नया है। फिर चाहे वह पत्रों के माध्यम से कथा बढ़ाने की बात हो या भाषा के माध्यम से विविधता हो। प्रतीक, बिम्ब, मुहावरे, लोकोक्तियाँ आदि तो उपन्यास को और भी सजीव बनाते ही हैं। अतः उपन्यास का शिल्प बहुआयामी है। उपन्यास में तुकबंदी, मुहावरे, लोकोक्तियाँ, प्रतीक बिम्ब आदि अत्यंत सफल रूप में लेखिका ने प्रयोग किए हैं। ये सभी उपन्यास के विषय को और अधिक परिपक्व तथा सुंदर बनाते है। उपन्यास की भाषा प्रयोगात्मक तथा उन नए अनुभवों को अपने में समेटे हुए है जो कि इस उपन्यास में चाहिए। एक एक्टिविस्ट रचनाकर, कैसे अपनी रचना में मूल सरोकार के प्रति समर्पित हो सकता है, यह इस अनोखे और पठनीय उपन्यास की भाषा बताती है।

मूलशब्द: किन्नर, कायदे-कानून, प्रतीक बिम्ब, प्रयोगात्मक, तुकबंदी, पत्राचार शैली

प्रस्तावना

'पोस्ट बॉक्स नं० 203 नाला सोपारा' चित्रा मुद्गल का अप्रतिम उपन्यास है। इस उपन्यास में लेखिका ने ऐसे विषय को आधार बनाया है जो अभिशप्त है जन्म लेते ही अपने परिवार से बिछुड़ने को। जी हाँ यह समुदाय किन्नर समुदाय ही है। हमारे समाज की संरचना ऐसी है जिसमें शायद ही कोई किन्नर अपने परिवार के साथ अन्य आम बच्चों की तरह जीवन व्यतीत कर सकता है। आज वक्त आ गया है कि हम इन रूढ़ियों को तोड़े और जीवन जीने दे हर व्यक्ति को उसकी आज़ादी के अनुरूप। इन रूढ़ियों को तोड़ने की अपील ही लेखिका का उद्देश्य है। उपन्यास का शिल्प भी सराहनीय है।

'पोस्ट बॉक्स नं० 203 नाला सोपारा' उपन्यास लगभग पाँच महीने की कथा है। जो एक संतान द्वारा अपनी माँ के लिए 17 पत्रों के जरिए एक विस्तृत जीवन है। जो कि 23 जुलाई, 2011 से शुरू होता है और 27 दिसम्बर, 2011 को खत्म होता है जिसमें एक किन्नर जिसका नाम विनोद उर्फ बिन्नी उर्फ बिमली था ने अपनी बा (माँ को) को पत्रों के माध्यम से अपने बारे में बताता तथा परिवार की जानकारी लेता था। उपन्यास में बिन्नी अक्सर भूतकाल की यादों को याद करता और ऐसी-ऐसी बातें बताता जो हर साधारण बच्चा अपने बचपन में करता तो है पर कभी कहता नहीं। शायद इसलिए क्योंकि हर बच्चे को परिवार से दूरी का सामना वैसा नहीं करना पड़ता है जैसा कि बिन्नी को करना पड़ा। बिन्नी की इन्हीं यादों के माध्यम से उपन्यास आगे बढ़ता रहता है और अन्य घटनाएँ भी घटती रहती हैं। ऐसी ही एक याद के बारे में बिन्नी बात करते हुए बा से कहता है - "तुझसे कभी नहीं बता पाया, बा। नहाने से मुझे डर लगता था। बाथरूम में तेरे जबरदस्ती धकेलने पर नल खोल, बाल्टी से फर्श पर पानी उलीच मैं नहाने का सिर्फ स्वांगभर रचता था। बस, तौलिए का कोना भिगोकर मुहं-हाथ भर पोंछ लिया करता था ताकि तू छुए तो महसूस करे कि मैं सचमुच बाथरूम से नहाकर निकला हूँ। तू तो समझती थी कि

नहाने के मामले में मैं नम्बरी आलसी हूँ। तेरा भ्रम तोड़ता तो कैसे ?''[1]

उपन्यास की भाषा प्रयोगात्मक तथा उन नए अनुभवों को अपने में समेटे हुए है जो कि इस उपन्यास में चाहिए। एक एक्टिविस्ट रचनाकार, कैसे अपनी रचना में मूल सरोकार के प्रति समर्पित हो सकता है, यह इस अनोखे और पठनीय उपन्यास की भाषा बताती है। यहाँ समाज की हर सतह उधड़ती हैं। भाषा में विभिन्न शब्दों जैसे तद्भव, तत्सम, देशच, विदेशज, गुजराती आदि हैं। तो साथ ही किन्नर समुदाय द्वारा प्रयुक्त होने वाली भाषा उपन्यास में यथार्थता का गुण भरती है।"[2]

देशज शब्द- अंतर्रात्मा, बुंदे, नानू बाबा आदि।

विदेशज शब्द- स्पेस्लिस्ट, ब्लड-प्रेशर, बिल्डिंग, गारंटी, होस्टल आदि।

अरबी-फारसी-उर्दू शब्द- कायदे-कानून, बख्शने।

गुजराती शब्द- 'मारे स्कूल जऊछे', सगपण (सगाई), बा, दीकरा आदि

ये सभी शब्द मिलकर उपन्यास की भाषा की विविधता को दिखाते हैं। उपन्यास की शैली भी अत्यंत रचनात्मक है। उपन्यास में पत्राचार शैली, प्रश्नात्मक शैली तथा कहीं-कहीं अनुमान परक शैली को आधार बनाया गया है। पत्राचार शैत्री तो अत्यंत यथार्थवादी लगती है। इसमें पत्र इस शैली में लिखे गए है मानों वह पत्र न होकर सामने चल रहा दृश्य है, जिसमे सच में एक बेटा अपनी बा से जिद्द कर रहा है या उसे मना रहा है। खासकर यह तीन शब्द दृश्य को अत्यंत सजीव कर देते है - बा, बा, बा,। 'सुन न बा'[3]

अनुमान परक शैली का भी प्रयोग है अर्थात् उपन्यास में केवल विनोद के ही पत्र हैं, बा के पत्रों के बारे में बीच-बीच में जो थोड़ा बहुत ब्यौरा मिलता भी है तो वह भी विनोद के ही माध्यम से, जिस कारण कई बार विनोद अनुमान ही लगता हुआ अपनी बा को पत्र लिखता, जिसका एक उदाहरण यह है कि - '' उसे पता चल गया है कि तू घर पर नहीं है। घर पर नहीं है तो पास के श्रीराम मंदिर नहीं जाएगी। मंदिर नहीं जाएगी तो पोस्ट ऑफिस नहीं जाएगी। पोस्ट ऑफिस नहीं जाएगी तो पोस्ट बॉक्स कैसे खोलेगी ?''[4]

उपन्यास में तुकबंदी, मुहावरे, लोकोक्तियाँ, प्रतीक बिम्ब आदि अत्यंत सफल रूप में लेखिका ने प्रयोग किए हैं। ये सभी उपन्यास के विषय को और अधिक परिपक्व तथा सुंदर बनाते है। यहाँ विनोद के माध्यम से लेखिका समस्त किन्नरों का दर्द तथा उनका नारकीय जीवन पाठकों के सामने बड़ी ही बेबाकी के साथ रखती है। विनोद प्रतीक ही है उन सभी किन्नरों का जिन्हें पैदा होते ही अपने घर से बेघर होना पड़ा और एक ऐसा जीवन जीना पड़ा जो वह जीना नहीं चाहता था तो साथ ही समाज का क्रूर चेहरा भी दिखता है। समाज पहले से इन सताए व प्रताड़ित लोगो को और किस हद तक प्रताड़ित करता है, यह सब 'पोस्ट बॉक्स नं० 203 नाला सोपारा' उपन्यास में देखने को मिलता है। लेखिका उपन्यास को जैसा कहना या लिखना चाहती थी वह सब कर पाई तो उसका खास कारण उपन्यास का शिल्प ही है। सफल शिल्प मदद करता है किसी भी उपन्यास की सृजनशीलता में। उपन्यास में लेखिका ने शिल्प के माध्यम से कई प्रयोग भी किए है। उनमें से एक है कि यह उपन्यास सत्रह भागों या अध्यायों में विभक्त है। उसमें एक से नौ तक के अध्याय या पत्रों के ऊपर लेखिका ने केवल जगह और दिनांक का ही ब्यौरा दिया है। जबकि दस से सत्रह तक के पत्रों में जगह, दिनांक के साथ-साथ समय का भी ब्यौरा है। जाहिर है ऐसा लेखिका ने शिल्प के प्रति सजग रह कर ही किया है। ऐसा इसलिए भी है क्योंकि बाद के पत्रों में घटनाएँ व द्वंद्व पहले से अधिक तेजी से घटते है, जिस कारण एक ही दिन या रात में कई बार पत्र लिखा गया है। जिसके लिए समय का ब्यौरा देना आवश्यक था।

'पोस्ट बॉक्स नं० 203 नाला सोपारा' का शिल्प अपने विषय के अनुरूप ही सजग और नया है। फिर चाहे वह पत्रों के माध्यम से कथा बढ़ाने की बात हो या भाषा के माध्यम से विविधता हो। प्रतीक, बिम्ब, मुहावरे, लोकोक्तियाँ आदि तो उपन्यास को और भी सजीव बनाते ही हैं। अतः उपन्यास का शिल्प बहुआयामी है इसमें कोई दो राय नहीं है।

संदर्भ सूची

1. 'पोस्ट बॉक्स नं० 203 नाला सोपारा', चित्रा मुद्गल (सामयिक पेपरवैक्स,),वही पृष्ठ सं० 200
2. वही पृष्ठ सं० 93
3. प्रदीप सौरभ - तीसरी ताली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण – 2011, पृष्ठ सं० 11
4. पृष्ठ सं० 59 (नाला सोपारा)